

शैक्षिक अध्ययन विभाग, शिक्षा संकाय, जामिया मिल्लिया इस्लामिया ने 'टूल वैलिडेशन वर्कशॉप' का आयोजन किया

नई दिल्ली, 20 मई, 2026

शैक्षिक अध्ययन विभाग, शिक्षा संकाय, जामिया मिल्लिया इस्लामिया (JMI) ने ICSSR द्वारा प्रायोजित एक दीर्घकालिक अनुसंधान परियोजना के तहत एक दिवसीय 'टूल वैलिडेशन वर्कशॉप' (उपकरण सत्यापन कार्यशाला) का आयोजन किया। इस परियोजना का शीर्षक है: "डिजिटल और गैर-डिजिटल कौशल विकास कार्यक्रमों के माध्यम से असम की चाय जनजातियों का सशक्तिकरण।"

इस कार्यशाला में शिक्षाविद्, विशेषज्ञ, संकाय सदस्य, शोधकर्ता और स्कॉलर एक साथ आए, ताकि इस अध्ययन के लिए तैयार किए गए अनुसंधान उपकरणों की समीक्षा और सत्यापन किया जा सके।

कार्यक्रम की शुरुआत पवित्र कुरान के पाठ से हुई, जिसके बाद परियोजना निदेशक प्रो. अहरार हुसैन ने स्वागत वक्तव्य दिया। उन्होंने शैक्षिक और सामाजिक विज्ञान अनुसंधान में प्रासंगिक रूप से उपयुक्त और पद्धतिगत रूप से सुदृढ़ अनुसंधान उपकरणों के महत्व पर ज़ोर दिया। विशिष्ट अतिथियों और विशेषज्ञों को शॉल और अंगवस्त्रम भेंट कर सम्मानित किया गया।

उद्घाटन व्याख्यान शिक्षा संकाय के कार्यवाहक डीन और शैक्षिक अध्ययन विभाग, जेएमआई के प्रमुख प्रो. एजाज़ मसीह ने दिया। उन्होंने हाशिये पर खड़े समुदायों के लिए सामाजिक रूप से प्रासंगिक अनुसंधान करने में क्षेत्र सत्यापन (field validation), आधारभूत डेटा (baseline data), और मात्रात्मक तथा गुणात्मक अनुसंधान उपकरणों के संतुलित उपयोग के महत्व पर प्रकाश डाला।

पहला अकादमिक सत्र प्रो. अहरार हुसैन की अध्यक्षता में शुरू हुआ। प्रो. निवेदिता गोस्वामी ने असम में चाय जनजाति समुदायों की सामाजिक-आर्थिक और भौगोलिक पृष्ठभूमि प्रस्तुत की, और चाय बागान श्रमिकों के सामने आने वाली विकासात्मक चुनौतियों पर चर्चा की। उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि इस परियोजना का उद्देश्य आधारभूत डेटा तैयार करना और डिजिटल तथा गैर-डिजिटल कौशल विकास कार्यक्रमों के माध्यम से सार्थक हस्तक्षेपों को समर्थन देना है। कार्यशाला समन्वयक डॉ. काज़ी फरदौसी इस्लाम ने अध्ययन के अनुसंधान उपकरणों और वैचारिक ढांचे को प्रस्तुत किया। उन्होंने श्रमिकों के कल्याण, पंजीकरण प्रणालियों, शैक्षिक अवसरों और चाय जनजाति समुदायों के सशक्तिकरण से संबंधित मुद्दों पर चर्चा की। सत्यापन के लिए निम्नलिखित उपकरण प्रस्तुत किए गए: 1. सर्वेक्षण प्रश्नावली 2. सरकारी योजनाएँ और पहल उपकरण 3. डिजिटल कौशल मूल्यांकन उपकरण 4. साक्षात्कार अनुसूची 5. फोकस ग्रुप चर्चा (FGD) आवश्यकता-आधारित मूल्यांकन उपकरण। कार्यशाला में विस्तृत तकनीकी सत्र शामिल थे, जिनमें सामग्री की वैधता, भाषा की स्पष्टता, संरचना, प्रासंगिकता, स्कोरिंग प्रक्रियाओं और उपकरणों की उपयुक्तता पर विशेष ध्यान दिया गया। विशेषज्ञों ने श्रमिकों को आकस्मिक, स्थायी और मौसमी समूहों में वर्गीकृत करने; विशेष रूप से युवा लाभार्थियों पर ध्यान केंद्रित करने; योजनाओं तक पहुँचने में आने वाली बाधाओं की पहचान करने; विभिन्न हितधारकों के लिए अलग-अलग उपकरण

विकसित करने; और डिजिटल इंडिया, युवा सशक्तिकरण, कल्याणकारी लाभों तथा जनसांख्यिकीय विवरणों से संबंधित प्रश्नों को शामिल करने की सिफारिश की।

कार्यशाला का समापन मूल्यवान अकादमिक चर्चाओं और सिफारिशों के साथ हुआ, जिनका उद्देश्य अनुसंधान उपकरणों को सुदृढ़ बनाना और असम के 'टी ट्राइब' (चाय बागान समुदायों) के बीच प्रभावी क्षेत्र-आधारित अनुसंधान सुनिश्चित करना था।

प्रो. साइमा सईद
मुख्य जनसंपर्क अधिकारी